3

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 3 के अंक	=	कुल अंक
	+	6	=	6

B S E M P

उत्तर = 01

त्वचा — शरीर में अस्थियो तथा पेशियो की रक्षा के लिए ऊपर एक आवरण पाया जाता है जिसे त्वचा कहते है।

उत्तर = 02

हार्मोन्स — शरीर की विभिन्न ग्रन्थियों से निकलने वाले रसायन को हार्मोन्स कहते है। इसकी खोज 1902 बेसलिस तथा स्टालिंग ने की थी।

उत्तर = 03

अस्थि — शरीर को सुदृढ़ता सुडौलता तथा एक निश्चित आकार प्रदान करने वाले तंत्र को कंकाल तंत्र या अस्थि संस्थान कहते है

उत्तर = 04.

हृदय में चार कपाट होते है —

01. बाया आलिन्द 02. बाया निचला निलय
03. दाया आलिन्द 04. दाया निलय

6

पृष्ठ के अंकों का योग

4

6	+	5	=	10
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर = 05.

भेदक दाँत —

यह दाँत नुकीले होते है तथा संख्या में चार होते है। यह भोजन को चिरने फाड़ने का कार्य करते है।

उत्तर = 06.

प्राथमिक चिकित्सा के प्रमुख उद्देश्य निम्न है —

01. मानव जीवन की रक्षा करना।

02. अचानक दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाना।

उत्तर = 07.

गीली मरहम पट्टी —

गीली मरहम पट्टी का उपयोग तेज बुखार होने पर किया जाता है। एक तोलिये को पानी भिगोकर सिर पर रखते है 5-5 मिनट

B S E M P

5

पृष्ठ के अंकों का योग

⑤ 10 + 6 = 16

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अंक

मध्यप्रदेश

के बाद बदलते जाते है। इससे व्यक्ति को तेज बुखार होतो वह उतर जाता है। बुखार से राहत मिलती है।

(3)

उत्तर = 08

पीयुष ग्रंथि सभी नलिकाविहीन ग्रंथियो को प्रभावित करती है। इससे निकलने वाले हार्मोन शरीर की वृद्धि, सामान्य आचरण लैंगिक विकास तथा कार्टेक्स आदि से स्त्रावित हार्मोन का नियंत्रण करती है। अतः अन्तः स्त्रावी तंत्र की मास्टर ग्रंथि कहा जाता है।

(3)

उत्तर = 09.

कृत्रिम श्वसन — अचानक दम घुटने पर या पानी मे डूबने पर व्यक्ति श्वसन नहीं ले पाता है। ऐसी स्थिती मे कृत्रिम श्वसन दिया जाता है।

यह निम्न प्रकार से दिया जाता है —

1. शेफर विधि
2. सिलवेस्टर विधि
3. लाबोर्ड विधि

BSEMP

6

पृष्ठ के अंकों का योग

04. मुख से मुख की विधि।

02. सिलवेस्टर विधि —

यह शेफर विधि के विपरीत विधि है। इसमें व्यक्ति के कपड़े ढीले करके उसे चित लिटाया जाता है तथा उसके सिर के निचे तकिया रखा जाता है तथा उसकी जीभ को साफ कपड़े से पकड़ने देनी चाहिए। श्वसन देने वाला व्यक्ति रोगी के सिर की ओर बैठकर उसके हाथ कोहनी से नीचे पकड़ने चाहिए तथा हाथों को पकड़कर ऊँचा करने से फेफड़ों में हवा भरती है।

यह क्रिया 5 मिनट 15-20 बार करना चाहिए। वक्ष स्थल पर गीला तौलिया फेरने से भी लाभ मिलता है।

डूबे व्यक्ति के लिए यह श्वसन आवश्यक है।

3

उत्तर = 10.

जीभ —

यह मॉसपेशियों की बनी होती है। इसका ऊपरी भाग खुरदरा तथा

⑦ | 19 | + | / | = | 19 |

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 7 के अंक — कुल अंक

निचला भाग एकदम चिकना होता है। यह आगे की ओर मेंडिबल अस्थि से तथा पीछे और बगल में हायड अस्थि से जुड़ी रहती है। इसमें स्वाद अंकुर पाये जाते हैं।

जीभ

जीभ के कार्य निम्नलिखित है —

01. जीभ से विभिन्न स्वादों का ज्ञान होता है। खट्टे, मीठे, नमकीन आदि।
02. जीभ भोजन को निगलने में सहायक होती है।
03. जीभ दाँतों को रखती है।
04. जीभ की नोक द्वारा मीठे स्वाद का

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

8 | 19 | + | 3 | = | 22
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 8 के अंक | कुल अंक

तथा बगल वाले भाग से खट्टे स्वाद का तथा पीछे के भाग से कड़वे स्वाद का ज्ञान होता है।
05 भोजन को दायें-बायें, ऊपर-नीचे करके दाँतो के सम्पर्क में लाती है।

3

उत्तर = 11.

त्वचा का कार्य निम्न लिखित है —

01. स्पर्श ज्ञान
02. विटामिन डी तैयार करना
03. अभिशोषण
04. निरुपयोगी पदार्थों विसर्जन
05. शरीर की रक्षा करना।
06. शरीर का ताप सामान्य बनाए रखना

01. स्पर्श ज्ञान — स्पर्श ज्ञान त्वचा स्पर्शेन्द्रिय है इससे विभिन्न संवेदनाओ का ज्ञान होता है।

02. विटामिन डी तैयार करना — त्वचा सूर्य के प्रकाश की सहायता से विटामिन-डी तैयार करती है जो दाँतो एवं हड्डियों के लिए

BSEMP

3
पृष्ठ के अंकों का योग

9 [22] + [3] = [25]
योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 9 के अंक — कुल अंक

मध्यप्रदेश

आवश्यक है।

03. निरुपयोगी पदार्थों विसर्जन — त्वचा यूरिया, यूरिक अम्ल जैसे निरुपयोगी पदार्थों को पसीने के रूप में शरीर से बाहर निकाल देती है।

04. अभिशोषण — त्वचा पर कोई दवाई या तेल लगाया जाये तो वह उसे अवशोषित कर लेती है।

05. शरीर की रक्षा — त्वचा शरीर भितरी अंगों को सुरक्षा प्रदान करती है तथा उनकी रक्षा करती है।

उत्तर = 12

अनैच्छिक पेशी — यह पेशी मध्य में मोटी तथा सिरे

3

पृष्ठ के अंकों का योग: 3

B S E M P

28	+	3	=	28
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 10 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर = 12

अनैच्छिक पेशियाँ —— यह पेशियां हमारी इच्छा की अधीन नहीं होती है इनपर मस्तिष्क का भी कोई नियंत्रण नहीं रहता है। यह बिना रुके दिन - रात काम करती रहती है। इन्हें अरेखित पेशी भी कहां जाता है

उदा० — हृदय की हृदय की धड़कन, फेफड़े आदि यह अनैच्छिक पेशियां है।

यह पेशी तन्तु मध्य भाग में मोटे तथा सिरो पर नोकदार होते है। इनके मध्य में केन्द्रक पाया जाता है। इनमें नाभिक तथा जीव रस पाया जाता है। इस पेशी के चारों ओर सुरक्षात्मक आवरण पाया जाता है। यह मुत्राशय की दिवार, रक्तवाहिनियों आदि स्थानों के में पाई जाती है।

अनैच्छिक पेशी

BSEMP

3

पृष्ठ के अंको का योग

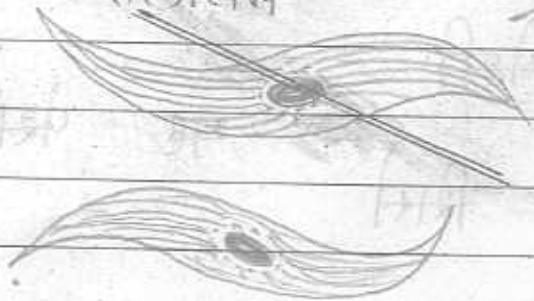

(11) 8 + 3 = 33
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 11 के अंक | कुल अंक

उत्तर = 13.

रजो धर्म —

रजो धर्म वह क्रिया है जो प्रत्येक स्त्री के परिपक्व होने पर या पूर्ण विकसित होने पर आरम्भ होती है। रजो धर्म आरम्भ होने से यह समझा जाता है कि स्त्री का पूर्ण विकास हो चुका है। यह धर्म 14 से 15 वर्ष की आयु में आरम्भ होता है। यह हर 28 में होता है। स्वास्थ्य में खराबी या अन्य कारणों से यह 28 दिन के पहले भी हो सकता है। स्त्री के परिपक्व होने पर उसके स्तनों का भी पूर्ण विकास होने लगता है।

3

उत्तर = 14

जीवाणुओं का कृषि में बहुत महत्व है। वह सड़े-गले पदार्थों, पत्तियों को सरल यौगिकों में बदल देता है जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। तथा फसल का अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है। कुछ जीवाणु भूमि की उर्वरता बढ़ाने में बहुत सहायक होते हैं। इनके द्वारा भूमि की उर्वरता शक्ति बढ़ती है।

2

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 12 के अंक = कुल अंक

BSEMP

उत्तर = 15

टूर्निकेट — यह एक प्रकार का यंत्रण रज्जु है। जो रक्त प्रवाह रोकने में सहायक होता है। रबर की निर्मित कई प्रकार की टूर्निकेट बाजार में मिलती है परन्तु सेन्ट जान्स टूर्निकेट अधिक उपयुक्त है। टूर्निकेट उपस्थित न होने पर प्राथमिक चिकित्सक रुमाल, पट्टी, धोती आदि का उपयोग कर सकता है।

टूर्निकेट का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है —

01. यदि गद्दी न प्राप्त हो तो उसके स्थान पर रुमाल या पट्टी का उपयोग किया जा सकता है।
02. गद्दी को पट्टी के मध्य भाग में रखकर पट्टी को अंग के चारों ओर लपेटकर बाँध देना चाहिए।
03. लकड़ी को अधिक कसकर बाँधना चाहिए व घुमाओ ताकि पट्टी अधिक कड़ी हो सके तथा रक्त प्रवाह बन्द हो सके।

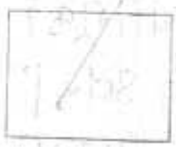

(13) 33 + 3 = 36

04. लकड़ी को उसी स्थान पर दुसरी पट्टी या गाठ के बाद बची हुई पट्टी से स्थिर कर देना चाहिए।
05. इस बात का ध्यान रखना चाहिए की दबाव बिन्दु ही दबे न कि सारा अंग। सारे अंग के दब जाने से शिराओं में रक्त आना बन्द हो जायेगा।

2

उत्तर = 16

मॉसपेशियो की विशेषताएँ — मॉसपेशियो की निम्न विशेषताएँ है —

01. हमारे शरीर का 2/3 भाग मॉसपेशियो से मिलकर बना होता है।
02. हमारे शरीर में जितना रक्त रहता है उसका 1/4 भाग रक्त मॉसपेशियो में रहता
03. मॉसपेशियो का संकुचन एवं शिथिलन का मुख्य गुण होता है।
04. मॉसपेशियो के सहयोग से हमारे शरीर में विभिन्न गतियाँ सम्भव होती है।
05. मॉसपेशियाँ स्पर्श करने पर कोमल प्रति

3

होती है।
06. माँसपेशियों में रक्त रहता है इसलिए उनका रंग लाल रहता है।
07. हमारे शरीर की विभिन्न क्रियायें जैसे हृदय का धड़कना, फेफड़े रक्त वाहिनीयों की आकुंचन आदि माँसपेशियों के द्वारा ही सम्भुत होती है।
08. माँसपेशियाँ शरीर को एक निश्चित आकार प्रदान करती है।

उत्तर - 17

लसिका —

रक्त में रहने वाला द्रव पदार्थ कोशिकाओं की झीनी दिवारों से भर जाता तथा शरीर के विभिन्न भागों में चला जाता है लसिका कहलाता है। इसमें अधिकांश तत्व रक्त के विद्यमान होते है क्योंकि इसका निर्माण रक्त से होता है। लसिका में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट आदि पदार्थ होते है।

लसिका के कार्य —

01. क्षतक द्रव में स्थित

15

39	+	3	=	42
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 15 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

अतिरिक्त द्रव को वापस भेद भेज देती है जिससे ऊतकों में निरन्तर ताजा द्रव प्रवाहित होता रहे है।

02. वह मार्ग है। जहाँ से अतिरिक्त प्रोटीन्स पुनः रक्त प्रवाह में मिल जाते है।

03. हानिकारक पदार्थों व बैक्टीरियल संक्रमण को नोड्स फिल्टर कर देते है।

04. लसिका वाहिकाए वसा युक्त भोजन के पाचन में सहायक होती है।

3

उत्तर = 18

संधि —

मानव शरीर में जिस स्थान पर दो या दो से अधिक अस्थियां आपस में मिलती है उस स्थान को सन्धि कहते है।

संधि के प्रकार —

01. चल संधि या पूर्ण संधि

02. अपूर्ण या थोड़ी गतिशील संधि

03. अचल संधि

BSEMP

3

पृष्ठ के अंकों का योग

(16) [५४] + [ ] = [५४]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 16 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

01. **चल संधि —**

यह संधि गतिशील होती है। इस संधि के दोनो सिरो पर सानोवीयल झिल्ली का आवरण पाया जाता है जो जो साइनोविअल द्रव को स्त्रावित कर संधि की सतह को चिकना बनाये रखता है। इन संधियो के कारण ही हमारे शरीर में विभिन्न गतियाँ सम्भव होती है।

चल संधि निम्न प्रकार की होती है —

01. गेन्द व प्यालेदार संधि
02. सैडल संधि
03. कीलदार संधि
04. चूलदार संधि
05. फिसलने वाली संधि

02. **अपूर्ण संधि —**

इस प्रकार की संधि में दोनो अस्थियो के बीच उपास्थि की गद्दी पाई जाती है। इन संधियो में थोड़ी गति होती है। परन्तु यह चल संधि की अपेक्षा अधिक मजबूत होती है। इसके अन्तर्गत श्रेणी मेखला की दोनो

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

ह्यूमिरस हड्डियों का जोड़ आता है।

(3) **अचल संधि** —— यह संधि बिलकुल गति नही करती है। इस प्रकार की संधि में दोनों हड्डियो के सिरे आरी के समान किनारे वाले होते है। दोनों किनारे एक दुसरे में फिट रहते है।

यह दृढ़ बन्धनों तथा स्नायुयो के द्वारा आपस में जुड़े होते है। यह अपनी जगह से हिल भी नही सकती है। इन संधियो के संगम स्थल पर एक विशेष कोष के रूप में झिल्ली पाई जाती है जिसे संधि कोष कहते है। इनके छोरो पर एक चिपकना पदार्थ स्त्रावित करने वाली झिल्ली पाई जाती है।

उत्तर = 19.

रक्त का संगठन —— मानव शरीर की धमनियो तथा शिराओ में बहने वाला लाल गाढ़ा चमकीला पदार्थ रक्त कहते है। जो मानव को जीवित रखने के लिए आवश्यक होता है।

BSEMP

५

पृष्ठ के अंकों का योग

एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 6 लीटर रक्त रहता है। रक्त में ९ भाग जल तथा 10% भाग ठोस पदार्थ रहता है।

रक्त में पाये जाने वाले भाग —
01. रक्त प्लाज्मा
02. लसिका

01. रक्त का तरल
01 रक्त प्लाज्मा —
रक्त का तरल भाग जो हल्के पीले रंग का होता है रक्त प्लाज्मा कहलाता है। इसमें 90% अंश ठोस तथा 10 अंश ठोस पदार्थ होते है।

02. लसिका —
रक्त में रहने वाला द्रव कोशिकाओ की पतली दिवारो से झर जाता है तथा शरीर के विभिन्न भागो में चला जाता है रक्त कहलाता है। इसमें 90% अंश जल तथा 10% अंश ठोस पदार्थ होता है।

रक्त के कार्य निम्न है—

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

01. श्वसन के लिए आवश्यक गैसो का परिवहन — रक्त फेफड़ो को ऑक्सीजन पहुँचाना तथा कार्बन-डाई-ऑक्साइड को बाहर निकालने का कार्य करता है।

02. भोज्य पदार्थो का परिवहन — रक्त भोजन के द्वारा अवशोषित किये गये पौष्टिक तत्वो को शरीर के विभिन्न भागो मे पहुँचाने का कार्य करता है।

03. निरुपयोगी पदार्थो का निष्कासन — रक्त त्वचा, फेफड़ो वृक्क आदि की सहायता से निरुपयोगी पदार्थो को बाहर निकालने का कार्य करता है।

04. शारीरिक ताप नियमन — कोशिकाओ मे ऑक्सीकरण के फलस्वरूप शरीर मे गर्मी उत्पन्न होती है यह गर्मी शरीर के आन्तरिक भागो मे अधिक रहती है। रक्त आन्तरिक भाग की गर्मी को बाह्य भागो मे पहुँचाकर शारीरिक ताप का नियमन करता है।

BSEMP

अंकों का योग

(20) | 46 | + | | = | 46 |
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 20 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

05. अम्ल एवं क्षार का सन्तुलन बनाए रखना —
रक्त हिमोग्लो एक अच्छे बफर की तरह कार्य करता है तथा त्वचा वृक्क एवं फेफड़ो की सहायता से अम्ल एवं क्षार का सन्तुलन बनाये रखता है।

06. रक्षात्मक कार्य —
रक्त शरीर मे कई रक्षात्मक कार्य करता है जैसे श्वेत रक्त कण फाइगोसैटिक गुण के कारण रोगाणुओं को निगल जाते है। एंटीबाडिज का निर्माण करना, रक्त जमने की क्रिया द्वारा रक्त को हानि से बचाता है।

07. शरीर की विभिन्न ग्रंथियो से जो स्त्राव स्त्रावित होते है रक्त उन्हें निर्मित करने के लिए उपयुक्त पदार्थ पहुँचाता रहता है।

08 विटामिन, एन्टीबाडीज तथा अन्य आवश्यक रसायनो को उनके क्रिया करने के स्थान पर पहुँचाकर वाहन का कार्य करता है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

09. शरीर के तन्तुओं में जल की मात्रा बनाये रखकर उन्हें कोमल बनाता है।

उत्तर = 20

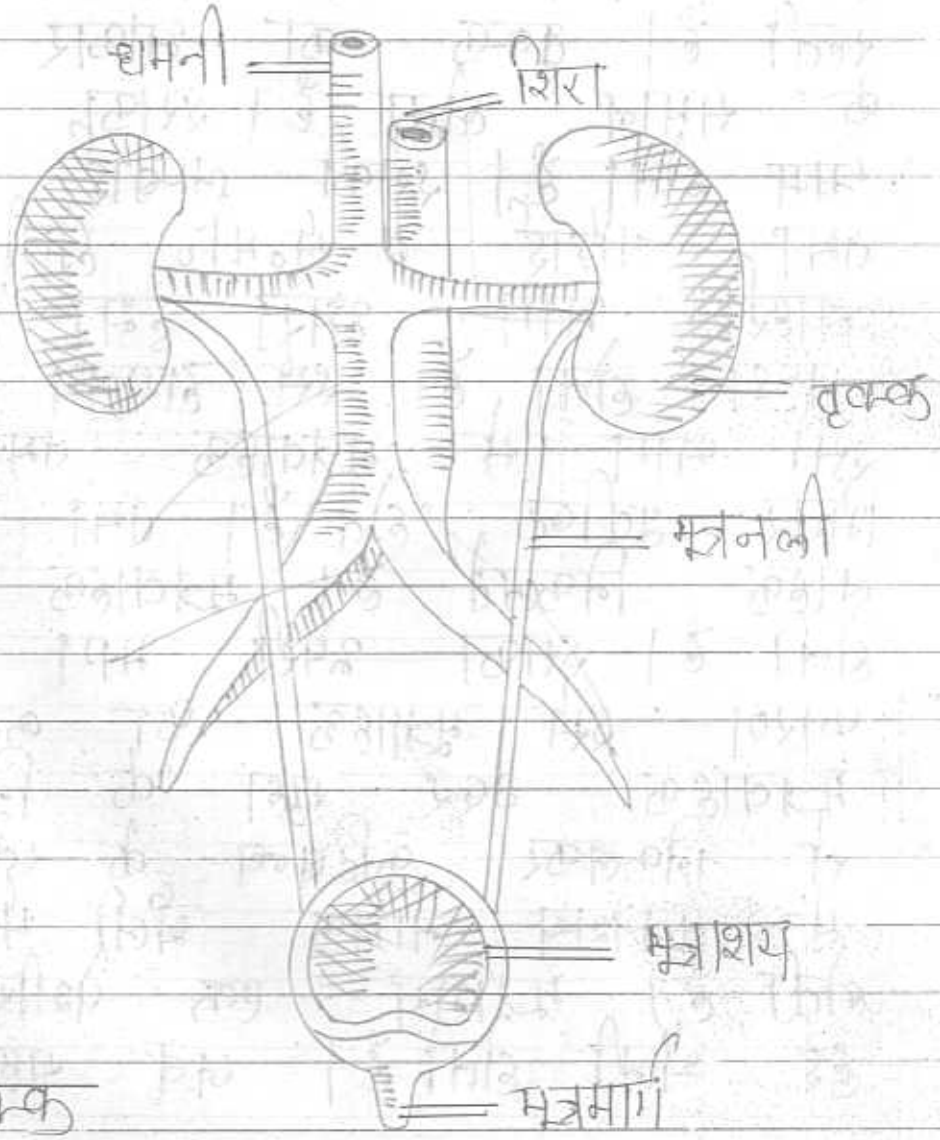

वृक्क का चित्र

वृक्क

5

पृष्ठ के अंकों का योग

22 | 51 + / = 51
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 22 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

वृक्क की रचना —

वृक्क या गुर्दे संख्या दो है। यह उदरगुहा के पिछले भाग में चर्बी में जमे हुए हैं इसलिए इनपर कोई आघात नही पहुँचता तथा यह अपनी जगह से हिल भी नही सकते हैं। इनके चारो ओर विशेषकर पीछे वसा रहती है। वृक्क का आकार सेम के बीज के समान होता है। इसका वजन 150 ग्राम होता है। इसकी लम्बाई 10 से॰मी॰ तथा चौड़ाई 6 से॰मी॰ होती है। इसका बाहरी भाग उभरा हुआ है इसमें एक गड्डा होता है इसे हायलम कहते हैं। इसी भाग से मूत्रवाहक तथा रक्तवाहिनीयाँ भितर प्रविष्ट होते हैं। तथा शिरा मूत्रवाहक बाहक निकलते है। मूत्रवाहक लम्बाई 25 से॰मी॰ होती है। इसका ऊपरी भाग चौड़ा होने के कारण इसे मूत्रवाहक का कटीर कहते है। मूत्रवाहक उदर गुहा के निचले भाग से निकलकर कटिबन्ध के खोखले भाग में मूत्राशय नामक थैली में तिरछा प्रविष्ट होती है। मूत्राशय एक पेशीयो की बनी हुई थैली होती है। जब यह थैली भर

जाती है तो सिकुड़ती है तथा मूत्रमार्ग द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। मूत्रमार्ग पेशीय सूत्रों द्वारा बन्द रहता है। इसपर ऐच्छिक पेशियों का नियंत्रण रहता है। मूत्र निष्कासन का अनुभव होने से पूर्व मूत्राशय में 200 - 250 मिली. जमा रहता है।

उत्तर = 21

पुल्टिस — शरीर के किसी भाग में मोच आने पर या फोड़ा - फुन्सी पकने पर पुल्टिस उपयोगी होती है। पुल्टिस के उपयोग से दर्द से राहत मिलती है तथा फोड़ा - फुन्सी पक कर मवाद निकल जाता है।

पुल्टिस के प्रकार — पुल्टिस निम्न प्रकार होती है तथा घरेलु इलाज के अन्तगत आती है।

(अ) **राई की पुल्टिस** — इस प्रकार के पुल्टिस में एक भाग राई तथा पाँच भाग अलसी

का आटा लेकर गर्म पानी में पेस्ट के समान बनाया जाता है। तथा प्रभावित अंग पर लगाया जाता है। यह पुल्टिस ठण्डी होने पर गर्म पुल्टिस का उपयोग करना चाहिए।

02 रोटी की पुल्टिस —

यह एक सरल प्राथमिक उपचार है। इसमें रोटी का गर्म भाग लेकर मोच या फोड़े पर लगाई जाती है। रोटी को गर्म पानी में रखकर या गर्म पानी में भिगोकर उपयोग करना चाहिए।

03. भूसी की पुल्टिस —

आटे को छानकर बचने वाला भाग होता है इसे गर्म पानी में पेस्ट के समान बनाया जाता है। तथा मोच या प्रभावित अंग पर लगाया जाता है। इस प्रकार के पुल्टिस का उपयोग चेहरे, घाव, माथे, हाथ आदि पर किया जाता है।

04. प्याज की पुल्टिस —

इस प्रकार के पुल्टिस

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ 25

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील C.No. 54029

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 16/3/07
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम हायर सेकेण्डी परीक्षा
7. विषय मातृकला 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 16/02/2007
पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

में प्याज का पेस्ट बनाकर इसमें नमक, हल्दी आटा मिलाकर तैयार किया जाता है। इस पुल्टिस का उपयोग करने से फोड़ा पकता है।

05. अलसी की पुल्टिस —

इस प्रकार के पुल्टिस जाली का टुकड़ा, जैतुन का तेल, अलसी का आटा तथा खौलते हुए पानी की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त सभी वस्तु को पानी में मिलाकर पेस्ट बनाया जाता है। इसे फोड़े के मिच पर 1.1 से.मी तह पर रखा जाता तथा कपड़े से बाँध दिया जाता है।

5

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग 5

3

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 2 के अंक	कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर = 22.

नालिकाविहीन ग्रंथियाँ — हमारे शरीर मे कुछ ग्रंथियाँ ऐसी होती है जिनसे महत्वपूर्ण स्त्राव स्त्रावित होता रहता है परन्तु उसे बहाकर ले जाने वाली कोई नलिकाये नही होती है। ऐसी ग्रंथियो को नलिकाविहीन ग्रंथियां कहते है।

मनुष्य मे पाये जाने वाली नालिकाविहीन ग्रंथियां निम्न है —

01 पीयूष ग्रंथि
02 एड्रीनल ग्रंथि
03 थायराइड ग्रंथि
04 पैराथायराइड ग्रंथि
05 थायमस ग्रंथि
06 जनन ग्रंथि
07 अग्नाशय ग्रंथि

नलिकाविहीन ग्रंथियो के कार्य निम्न है —

01. पीयूष ग्रंथि से निकलनेवाले हार्मोन की कमी से बच्चो में भीमकायता रोग हो जाता है।

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक
60	+	4	=	64

से निकलने वाले हार्मोन

02. पीयूष ग्रंथि की कमी से वयस्को एक्रोमेगली रोग हो जाता है।

03. पीयूष ग्रंथि से निकलने वाले हार्मोन की कम अधिकता से बच्चो में वयस्को में सिमण्ड रोग होता है।

04. थायरोट्राफिक हार्मोन थायराइड ग्रंथि को उत्तेजित करता है।

05. प्रतिमूत्रक हार्मोन का कार्य मूत्र के निम[...] पर नियत्रंण करना है अन्यथा अत्यधिक मूत्र निकलने से मधुमेह रोग हो जाता [...]

06. थायराक्सीन हार्मोन की कमी से बच्[...] बौनापन आ जाता है। जिसे जड़वामन भी कहते है।

07. ग्रंथियाँ लैंगिक विकास, शारीरिक आचरण[...] शरीर की वृद्धि आदि को प्रभावित करती [...]

08. आक्सीटोसिन हार्मोन गर्भयुक्त गर्भाशय की पेशियो को सिकोड़ता है।

09. आक्सीटोसिन हार्मोन दुग्ध ग्रंथियो की सिकोड़[...] है।

10. थायराक्सीन हार्मोन के अधिक स्त्रावण से एक्सप्थैल्मिक ग्वायटर रोग हो जाता है।

B S E M P

4

पृष्ठ के अंको का योग

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक
69	+	/	=	69

BSEMP

के अंकों का योग

69

Sixty Nine